नए सीजन में भी शुगर मिल्स की बढ़ेगी खटास

जयश्री & मनमोहन राय पुणे & लखनऊ

रॉ मैटेरियल की बढ़ती कीमतें नए सीजन में शुगर कंपनियों के मार्जिन में सेंध लगा सकती हैं। यूपी की शुगर मिलों को उम्मीद है कि अखिलेश यादव की सरकार मिलों और किसानों के बीच संतुलन बनाएगी। वहीं, महाराष्ट्र में मिलों के बीच गन्ने की बोली को लेकर लड़ाई देखी जा सकती है। दरअसल, गन्ने की सप्लाई कम हो गई है।

पिछले फाइनेंशियल ईयर में नुकसान उठाने वाली उत्तर प्रदेश की शुगर मिलों को गन्ने की कीमतों में और बढ़ोतरी होने के आसार दिख रहे हैं। शुगर टेक्नोलॉजीज एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसटीएआई) के प्रेसिडेंट और सिंभावली शुगर लिमिटेड के सीईओ जी एस सी राव ने बताया, 'इस साल गन्ने की कीमतों में अगर बढ़ोतरी होती है, तो हमारे साथ पूरी इंडस्ट्री के लिए नुकसानदायक साबित होगी। पिछले कुछ क्वार्टर्स में हमें नुकसान हुआ है और अब इंडस्ट्री गन्ना महंगा होने का बोझ नहीं उठा सकती।'

उत्तर प्रदेश सरकार गन्ने के एसएपी का एलान नवंबर के पहले हफ्ते में करती है। उम्मीद है कि सरकार एसएपी तय करने के पहले किसानों और मिल मालिकों समेत संबंधित विभागों के साथ बातचीत करने की प्रक्रिया जल्द शुरू कर सकती है। इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन के डायरेक्टर जनरल अविनाश वर्मा ने बताया कि शुगर की मौजूदा कीमतों को देखते हुए गन्ने के एसएपी में बढ़ोतरी करना मुश्किल दिखता है। उन्होंने कहा, 'अगर उत्तर प्रदेश सरकार एसएपी में बदलाव नहीं करती है और इसे 240 रुपए प्रति क्विंटल रहने देती है, तो भी शुगर इंडस्ट्री को प्रॉफिट नहीं होगा। हमारी प्रोडक्शन कॉस्ट 34,500 रुपए प्रति टन के करीब है। हम शुगर के दाम भी इसी के बराबर रहने की उम्मीद है। ऐसे हालात में प्रॉफिट होने की उम्मीद न के बराबर है।'

इंडस्ट्री को यूपी से मिलों और किसानों के बीच संतुलन बैठाने की आस, वहीं, महाराष्ट्र में गन्ने की सप्लाई कम होने से बढ़ी गई है दिक्कत

उत्तर प्रदेश के एक और शुगर मिल मालिक ने नाम न जाहिर होने की शर्त पर बताया कि सरप्लस प्रोडक्शन से अगले साल शुगर की कीमत कम हो सकती है, जिससे घाटा होना तय है। ऐसे में इंडस्ट्री 2012-13 के एसएपी में इजाफा नहीं होने की आस लगाए बैठी है। दूसरी तरफ, देश में चीनी के नंबर वन प्रोड्यूसर महाराष्ट्र में गन्ने को लेकर मारकाट तय है।

मिलों को नुकसान से बचने के लिए कम से कम 150-160 दिनों तक की गन्ने की सप्लाई सुनिश्चित करनी होगी। पुणे के एक किसान ने बताया, 'एक प्राइवेट शुगर मिल ने मुझे गन्ने के लिए 3,200 रुपए प्रति टन का ऑफर दिया है।' राज्य सरकार ने नवंबर में कटाई शुरू होने का फैसला तो किया है, लेकिन गन्ने की कीमतों पर वह चुप्पी साधे हुए है।

शुगर प्रोडक्शन अनुमान में कटौती

पुणे: इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (इस्मा) ने सीजन 2012-13 के लिए प्रोडक्शन के अनुमान में कटौती की है। एसोसिएशन ने चालू सीजन के लिए चीनी प्रोडक्शन अनुमान 2.5 करोड़ टन से घटाकर 2.4 टन कर दिया है। जून में इस्मा ने 2012-13 सीजन के लिए शुरुआती अनुमान में 2.5 करोड़ टन शुगर प्रोडक्शन की बात कही थी। सैटेलाइट डाटा के आकलन, 80 प्राइवेट मिलों के अनुमान और महाराष्ट्र और कर्नाटक में गन्ने के खेतों का दौरा करने के बाद एसोसिएशन ने महाराष्ट्र में शुगर प्रोडक्शन का अनुमान पिछले साल के 90 लाख टन से घटाकर इस साल 65 लाख टन कर दिया। शुगर मिल्स एसोसिएशन को कर्नाटक में प्रोडक्शन पिछले साल के 38 लाख टन से घटकर 30 लाख टन तक पहुंचने की आशंका है। महाराष्ट्र में शुगर मिलों ने 2010-11 और 2011-12 में करीब 90-90 लाख टन शुगर प्रोडक्शन किया।